भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 1819

16 दिसम्बर, 2022 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

औषधियों का अनुसंधान और विकास

1819. श्री प्रभुभाई नागरभाई वसावा:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या मंत्रालय ने कोई अनुसंधान किया है अथवा ऐसी कोई औषधियां विकसित की हैं जो जनजातीय लोगों और विशेषकर उन्हें प्रभावित करने वाले रोगों के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रासंगिक है;

(ख) यदि हां, तो विगत तीन वर्षों के दौरान विशेषकर गुजरात जनजातीय लोगों के संदर्भ में तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) सरकार द्वारा विकसित औषधियों का ब्यौरा क्या और वे जनजातीय लोगों और वनवासियों के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों में किस सीमा तक सुधार करने में सक्षम रही हैं?

उत्तर

आयुष मंत्री (श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क) और (ख): जी हां। आयुष मंत्रालय के अधीन अनुसंधान परिषदों ने जनजातीय क्षेत्रों में निम्नलिखित गतिविधियां शुरू की हैं:

i. आयुष मंत्रालय के अधीन केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सी.सी.आर.ए.एस.) ने सिकल सेल एनीमिया के लिए एक नुस्खा (आयुष-आरपी - एक कोडित दवा) विकसित किया है। बहिर्वर्ती अनुसंधान (ईएमआर) योजना के तहत, 2013 में नादुरबार जिले (महाराष्ट्र) में सिकल सेल एनीमिया पर एक नैदानिक अध्ययन किया गया था। अध्ययन के परिणाम प्रकाशित हो चुके हैं।

इसके अलावा, जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम (टीएचसीआरपी) के जरिए, सीसीआरएएस ने 14 सीसीआरएएस संस्थानों के माध्यम से 14 राज्यों में चिन्हित किए गए जनजातीय बहुल गांवों/क्षेत्रों में बीमारियों की रोकथाम और उपचार तथा स्वास्थ्य देखभाल के लिए कई पहल की हैं। **संलग्नक-I** में विस्तृत सूची दी गई है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जनजातियों के बीच स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा करना, उनके दरवाजे तक आकस्मिक चिकित्सा देखभाल सेवा उपलब्ध करना और घर-घर सर्वेक्षण करके जनसांख्यिकीय रुझानों के दस्तावेज तैयार करना है।
वर्ष 2021-22 के दौरान, सी.सी.आर.ए.एस. ने एनीमिया और ऑस्टियोआर्थराइटिस, जो

आदिवासी लोगों में प्रचलित हैं, के प्रबंधन के लिए भी शोध किया है। ये शोध अध्ययन वर्ष 2021-22 के दौरान गुजरात राज्य की जनजातियों के लिए भी किए गए हैं जिन्हें सीसीआरएएस संस्थान, क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (आरएआरआई), अहमदाबाद के माध्यम से कुल 06 गांवों में किया गया।

ii. केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सी.सी.आर.एच.) ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और आयुष मंत्रालय के सहयोग से निम्नलिखित कार्य शुरू किए हैं-

- मई 2017 से मई 2020 तक दो आदिवासी जिलों (संबलपुर, ओडिशा और नासिक, महाराष्ट्र) में कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग और स्ट्रोक की रोकथाम हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस) में होम्योपैथी और योग को शामिल करने की एक प्रायोगिक परियोजना। कुल लाभान्वित व्यक्तियों की संख्या 65,431 थी।
- आमेर ब्लॉक जयपुर, राजस्थान (अप्रैल 2017 से सितंबर, 2018 तक) के 19 आदिवासी गांवों में और कांके ब्लॉक, रांची, झारखंड (अक्टूबर, 2017 से जुलाई 2020 तक) के 8 गांवों में स्वस्थ बच्चे के लिए होम्योपैथी। नामांकित हुए कुल बच्चों की संख्या 6942 थी।
- रांची, पोर्ट ब्लेयर और गंगटोक के 06 गांवों में जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिविर भी आयोजित किए गए।

राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान (एनआईएसआर), लेह ने वर्ष 2021-2022 के लिए जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम शुरू किया है ताकि जनजातीय लोगों को उनके दरवाजे तक चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई जा सके, उनकी रहन-सहन की स्थितियों, स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं, औषधीय पौधों की उपलब्धता, स्वच्छता के बारे में जानकारी देने, क्षेत्र में सामान्य औषधीय पौधों के उपयोग से बीमारियों की रोकथाम करने से संबंधित अध्ययन किया जा सके। इसके अलावा, एनआईएसआर ने कारगिल जिले की सबसे दूरस्थ जंस्कर घाटी में जनजातीय समुदाय को चिकित्सा सहायता प्रदान करने और जनजातीय लोगों की रहन-सहन की स्थितियों का अध्ययन करने के उद्देश्य से पदम जंस्कर, जिला कारगिल में सोवा रिग्पा जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल क्लिनिक भी शुरू किया है।

आयुष मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय पूर्वी आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पासीघाट ने निम्नलिखित अनुसंधान कार्य शुरू किए हैं-

- नागालैंड के तुएनसांग जिलों के कुछ जनजातियों के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोक चिकित्सा प्रथाओं और पद्धतियों का डिजिटल प्रलेखन (कार्य पूर्ण)।
- नागालैंड के कोहिमा जिले की अंगामी जनजातियों के पारंपरिक खाद्य पदार्थों का प्रलेखन (कार्य जारी)।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय "औषधीय पादपों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन पर केन्द्रीय क्षेत्र योजना" के नाम से एक स्कीम कार्यान्वित कर रहा है जिसमें निम्नलिखित कार्यकलापों को सहायता प्रदान की जाती है:

(i) हर्बल गार्डन की स्थापना सहित स्व-स्थाने संरक्षण/बाह्य-स्थाने संरक्षण।

(ii) बढ़ावा देने संबंधी गतिविधियां जिसमें रोपाई हेतु रोपण सामग्री उगाने के लिए नर्सरियों की स्थापना, औषधीय पौध उत्पादों का विपणन और व्यापार शामिल है।

(iii) संयुक्त वन प्रबंधन समितियों (जेएफएमसी)/पंचायतों/वन पंचायतों/जैव विविधता प्रबंधन समितियों (बीएमसी)/स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के साथ आजीविका संपर्क।

(iv) सूचना शिक्षा और संचार (आईईसी) गतिविधियां जैसे प्रशिक्षण/कार्यशालाएं/सेमिनार/सम्मेलन आदि।

(v) औषधीय पौधों के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान और विकास गतिविधियां।

उपर्युक्त योजना के अनुसंधान और विकास घटक के अंतर्गत औषधीय पादपों के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान कार्यकलाप करने के लिए देश भर में सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों/अनुसंधान संस्थाओं/संगठनों को परियोजना आधारित वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। औषधीय पादपों के सर्वेक्षण, प्रलेखन सहित औषधीय पादपों के विभिन्न पहलुओं पर सहायता प्राप्त अनुसंधान परियोजनाओं का ब्यौरा **संलग्नक-II** में दिया गया है।

(ग): आयुष मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सी.सी.आर.ए.एस.) जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम (टीएचसीआरपी) के जरिए 14 सीसीआरएएस संस्थानों के माध्यम से 14 राज्यों में उनके द्वार पर आकस्मिक चिकित्सा सहायता उपलब्ध करा रही है, साथ ही रोगों की रोकथाम और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए आयुर्वेदिक आहार और जीवन शैली के बारे में जागरूकता सृजन कार्यक्रम आयोजित करती है और उनकी क्षेत्रीय भाषा में आईईसी सामग्री भी उपलब्ध कराती है जिसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। सी.सी.आर.ए.एस. ने टीएचसीआरपी के सभी 14 केंद्रों में शास्त्रीय आयुर्वेद फॉर्मूलेशन भी प्रदान किए हैं, जिन्हें लाइसेंस मिला हुआ है और जो पहचान की गई स्थितियों, एनीमिया और ऑस्टियोआर्थराइटिस में सुरक्षित और प्रभावी साबित हुई हैं, जैसे एनीमिया के प्रबंधन में *धात्रि लौह* + शहद, और ओस्टियोआर्थराइटिस के प्रबंधन में *योगराज गुग्गुलु, अश्वगंधा चूर्ण और नारायण तेल* ।

*****

संलग्नक-I

जनजातीय उप-योजना के तहत जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम का विवरण- 98 गांव (2022-23)

क्र.सं.	संस्थान का नाम	राज्य	ब्लॉक/गांवों की संख्या	ब्लॉक/गांव का नाम
1	सीएआरआई, भुवनेश्वर	ओडिशा	07	संतरपुर, छतिया, पैपानी, चिकनगोबिंदपुर, अंकलपाड़ा, सरूपत रूतिसिला, बोर्दा
2	आरएआरआई, जयपुर	राजस्थान	10	घटोल, पदल चोटी, देवदा, से बदनानवासा, बामन पारा, चरदा, बस्सी अदा, देलवाड़ा लोकिया
3	आरएआरआई, विजयवाड़ा	आंध्र प्रदेश	05	मडगाड, बस्की, मदाला, गन्नेला, पनिरंगिनी
4	आरएआरआई, नागपुर	महाराष्ट्र	11	अमीरज़ा, धुंदे-शिवानी, रंगी, फुलबोदी, नारचुली, पोटेगांव, मारेगांव, सावेला, चंबरदा, चटगाँव, स्वरगाँव
5	आरएआरआई, ग्वालियर	मध्य प्रदेश	13	झिलपिपरिया, जोगीमुआर, खुलसन, लहगडुआ, मनकदेई, मुत्तोर, नागरी, चौकी, बिजोरीराइत, चारगांवराइत, हिनोतियाराइत, कटोरी, खखरिया, सिलपानी
6	सीएआरआई, बंगलौर	कर्नाटक	06	सागरे, इतना, होसाहल्ली, हलासुर, बुदानूर, के.येडाथोर
7	आरएआरआई, पटना	बिहार	06	बेरई, घुरौली, दारदारी, नौरंगिया, बैरियाकलां, महदेवा
8	सीएआरआई, गुवाहाटी	असम	04	चौधरीपारा, जारपारा, पकरापारा, देलियापारा
9	आरएआरआई, गंगटोक	सिक्किम	13	मार्तम, चोचेनफेरी, कार्तोकनंदूक, राकडोंग टिंटैक, ईस्ट पैंडम, ही, सिंगलिंग, समडोंग लिंगचोम टिक्ज्याक, लैबिंग, अपर फैंबोंग
10	आरएआरआई, जम्मू	जम्मू	06	भटोली, मानो, हदल, मुकस्यास, धदकही, चिलीपैन
11	एलएलआरएआरआई चेन्नई	तमिलनाडु	04	करियालुर पंचायत, पचेरी पंचायत, कोंडियानाथम पंचायत, पोट्टियम पंचायत (पंचायत के अंतर्गत 32 गांव)
12	आरएआरआई, पोर्ट ब्लेयर	अंदमान और निकोबार द्वीप	07	फेरारगंज, प्रोथरापुर, सवाई, बिग लैपथी, किन्युका, आरोंग, किनमाई किनमोइस
13	आरएआरसी, त्रिपुरा	त्रिपुरा	05	जिरानियाखला, राधापुर, कैरई, दीनबंधुनगर, पुरबा तकरजाला चिकनचेरा
14	आरएआरआई, अहमदाबाद	गुजरात	06	पधरा, बहेदिया, जडी सेंबल, पटादिया, झंजवा पनई हिंगतिया

पूरे देश में विभिन्न संगठनों के लिए वित्तीय वर्ष 2019-20 से 2021-22 के दौरान औषधीय पादपों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना के तहत औषधीय पादपों के सर्वेक्षण, प्रलेखन सहित औषधीय पादपों के विभिन्न पहलुओं में सहायता प्राप्त अनुसंधान परियोजनाओं का विषय-वार विवरण नीचे दिया गया है:

क्र.सं.	अनुसंधान क्षेत्र	राज्य	परियोजनाओं की संख्या
i.	औषधीय पादपों का सर्वेक्षण, पहचान, लक्षण वर्णन और संरक्षण	हिमाचल प्रदेश	1
		केरल	1
		मध्य प्रदेश	1
ii.	फसलोपरांज प्रबंधन, भारी धातुओं का मूल्यांकन और एकीकृत पोस्ट प्रबंधन	कर्नाटक	2
		तमिलनाडु	1
iii.	किस्मों का विकास और विपणन की संभावना	असम	1
iv.	जीनोटाइप पहचान, आनुवंशिक सुधार, जीनोम अध्ययन और जर्मप्लाज्म संग्रह और संरक्षण	अंदमान और निकोबार द्वीप	1
		केरल	1
		कर्नाटक	1
v.	कृषि तकनीकों का विकास, नर्सरी तकनीकों और खेती पद्धतियों का मानकीकरण	चंडीगढ़	1
		केरल	1
		उत्तराखंड	1
vi.	इन-विट्रो प्रवर्धन अध्ययन, सूक्ष्म प्रवर्धन रसायनिक और आणविक प्रोफाइलिंग और फाइटो-केमिकल्स आकलन	हिमाचल प्रदेश	2
		कर्नाटक	1
		पंजाब	2
		उत्तर प्रदेश	1
vii.	बायो-एक्टिविटी निर्देशित अंशांकन अध्ययन और नैदानिक-पूर्व अध्ययन	दिल्ली	1
		केरल	1
		हिमाचल प्रदेश	1
		तेलंगाना	1
		पश्चिमी बंगाल	1
viii.	जिओ-टैग डिजिटल लाइब्रेरी का सर्वेक्षण, प्रलेखन और विकास	असम	1
		राजस्थान	2
		पंजाब	1
ix.	कच्ची दवाओं के स्थानापन्न और प्रमाणीकरण का पता लगाना	असम	1
		गुजरात	1
		हिमाचल प्रदेश	1
		केरल	2
		महाराष्ट्र	1
		ओडिशा	1
		कुल	**35**